भोजपुरी अकादमी, पटना
तिसरका वार्षिकोत्सव समारोह
[रविवार, २ मई, १९८२]
के अवसर पर आयोजित

व्याख्यानमाला

में

भोजपुरी जनपद के संस्कृति

विषय पर

आचार्य डा० विश्वनाथ प्रसाद वर्मा
एम० ए० इतिहास (पटना), एम० ए० राजनीतिशास्त्र (कोलम्बिया-न्यूयार्क)
पी-एच० डी० राजनीतिशास्त्र (शिकागो)
अध्यक्ष, राजनीतिशास्त्र विभाग
एवं
निदेशक, इन्स्टिट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, पटना विश्वविद्यालय
भूतपूर्व डीन, कला संकाय, पटना विश्वविद्यालय
भूतपूर्व अध्यक्ष, अखिल भारतीय राजनीतिशास्त्र महासंघ

के

व्याख्यान

भोजपुरी अकादमी कार्यालय
बोरिंग रोड, पटना-८०० ००१

भोजपुरी जनपद के संस्कृति

संस्कृति के सम्बन्ध मनुष्य का संस्कार के संशोधन से बा। जेह ढंग से मनुष्य नीमन आदमी बनी, ओकरा भावना के परिष्कार होई, ओकरा चित्तवृत्ति के संशोधन होई, ओकरा देवत्व के विकास होई, ओकर राक्षसीपना खतम होई, ओकर हृदय विशाल आ निर्मल होई—ई सब विषय आ बात के संस्कृति कहल जाला। नीतिशास्त्र, धर्म, दर्शन, कला, साहित्य आदि के सम्बन्ध संस्कृति से ह। वेद, रामायण, महाभारत, अजन्ता के चित्रकारी, मदुराई आ पुरी आदि के मन्दिर संस्कृति के उत्कृष्ट उदाहरण बा। सभ्यता के सम्बन्ध मनुष्य का सामुदायिक आ व्यावहारिक जीवन से बा। जइसे मनुष्य सभ्य बनी अर्थात् ओकरा व्यापक राजनीतिक जीवन के विकास होई, एकर सभ्यता से सम्बन्ध बा। राजनीतिक विकास, आर्थिक उन्नति, वैज्ञानिक चमत्कार, तकनीकी आ यान्त्रिक विस्तार आदि के संग्रहण सभ्यता से बा। 'संस्कृति' शब्द के प्रयोग **यजुर्वेद** का वाजसनेयी संहिता में आइल बा आ **'सभा'** शब्द के प्रयोग **अथर्ववेद** में बा। एह छोट निबन्ध में प्रायः एही पृथक्ता के ध्यान में रख के हमनी का विवेचन करब।

भोजपुरी जनपद में सारन, सीवान, गोपालगंज, पूर्वी आ पश्चिमी चम्पारण, भोजपुर, रोहतास, बलिया, देवरिया, बैतालपुर, गोरखपुर, गोंडा, बस्ती, बनारस, मिर्जापुर, जौनपुर, आजमगढ़ आदि जिला के जे क्षेत्र बा, ओकरे ग्रहण होई। मध्यप्रदेश के भी कुछ जिला एह जनपद में बा। संक्षेप में, पूर्वी उत्तरप्रदेश आ पश्चिमी बिहार के सम्मिलित क्षेत्र भोजपुरी जनपद का अन्तर्गत मानल जा सकेला। प्राचीन काल से ही एह जनपद के एगो निराली संस्कृति बा। काशी एकर सांस्कृतिक मूलस्थान कहल जा सकेला। प्राचीन वैदिक सभ्यता के क्षेत्र **मनुस्मृति** का अनुसार ब्रह्मावर्त्त, ब्रह्मर्षिदेश आ मध्यदेश रहे। एह तीनों क्षेत्र का बाद जे पूरबी क्षेत्र बा, ऊ भोजपुरी जनपद में लिहल जा सकेला अर्थात् गंगा, यमुना, सरस्वती का संगम का बाद से पूरब गंगा आ गंडक का संगम तक के क्षेत्र भोजपुरी संस्कृति के मेरूदंड मानल जा सकेला। उपनिषद् काल में भी ई प्रदेश, जेकरा के संक्षेप वास्ते एह लेख में हमनी भोजपुरी जनपद कहब, सांस्कृतिक दृष्टि से महत्त्व-पूर्ण रहे।

---

१. विश्वनाथ प्रसाद वर्मा, राजनीति और दर्शन (बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, १९५६)।

वेदकाल में याज्ञिक कर्मकांड के प्रधानता रहे। उपनिषद्-काल में ब्रह्मात्मैक्यवादी अद्वैत वेदान्त के विस्तार भइल। एह विस्तार में पांचाल देश से ले के जनकपुर तक के क्षेत्र के महत्त्वपूर्ण स्थान रहे। एह प्रसंग में बलाकापुत्र बालाकि आ अजातशत्रु काश्य के **बृहदारण्यक** उपनिषद् आ **कौषीतकी** उपनिषद् में प्रसिद्ध शास्त्रार्थ के वर्णन बा। बलाकापुत्र बालाकि, उशीनर, मत्स्य, कुरू, पांचाल आ विदेह में रह चुकल रहस। लेकिन भोजपुरी क्षेत्र काशी में ही उनका विज्ञानमय पुरुष के तत्वज्ञान प्राप्त भइल। अजातशत्रु काश्य अर्थात् काशिराज उपनिषद् के महान् ज्ञानी रहस। ऊ काश्य रहस, एह से उनका के भोजपुरिआ मानल जा सकेला। उनका अनुसार मनुष्य के आत्मा ही परम तत्व ह, अत: एकर ज्ञान आवश्यक बा। काशिराज अजातशत्रु का अनुसार आदित्य में जे पुरुष बा, चन्द्रमा में जे पुरुष बा, विद्युत में जे पुरुष बा, आकाश में जे पुरुष बा, अग्नि आ जल में जे पुरुष बा, गमनशील के पश्चात्गत जे शब्द बा (अर्थात् जायेवाला के पीछे जे शब्द उत्पन्न होता) आ दिशा में जे पुरुष बा, छायामय जे पुरुष बा, प्रजापति आ बुद्धि में जे पुरुष बा, ऊहे पुरुष असली तत्व ना ह। ई मात्र आधिभौतिक आ आधिदैवत पक्ष ही ह। अजातशत्रु का विचार में विज्ञानमय पुरुष जब सुप्त रहेला, ओह समय ओकर प्राण आ वाणी आदि गृहीत रहेला। जब विज्ञानमय पुरुष स्वप्नवृत्ति में रहेला, ओह समय ओकर कर्मफल उदित होखेला आ ऊ प्राण के ग्रहण क के अपना शरीर में यथाकाम विचरेला। सुषुप्ति का अवस्था में कुछ भी बाहरी ज्ञान ना रहे। ओह समय 'हिता' नाम के ७२,००० नाड़ी जे हृदय में व्याप्त बा, ओह सब का द्वारा आत्मा शरीर में व्याप्त हो के शयन करेला। जइसे मकड़ा तन्तुअन पर ऊपर का ओर जाला, आउर जइसे अग्नि से क्षुद्र चिनगारी निकलेले, ओही प्रकार एह विज्ञानमय आत्मा से सब प्राण, सब लोक, सब देवता आउर समस्त भूत उत्पन्न होलें। ईहे असली ज्ञान ह। ई सत्य के सत्य ह। ईहे विशुद्ध उपनिषद् के ज्ञान ह। एही से श्रेष्ठता, स्वाराज्य आ आधिपत्य के प्राप्ति होला। स्पष्ट बा कि उपनिषद् के महान् ज्ञान के विस्तार में भोजपुरी क्षेत्र अर्थात् काशी के भी महत्त्वपूर्ण स्थान बा।

उपनिषद् का बाद बौद्ध संस्कृति के विकास में भी भोजपुरी जनपद के महत्त्वपूर्ण स्थान बा। भगवान बुद्ध यदि भोजपुरी ना त भोजपुरी क्षेत्र के समीप के ही रहेवाला रहीं। कपिलवस्तु (लुम्बिनी), जहाँ बुद्ध भगवान् के जनम

भइल, आ कुशीनगर, जहाँ उनकर देहान्त भइल ई दुनों स्थान, प्राय: भोजपुरी प्रदेश में बा। यदि लुम्बिनी के बारे में कुछ विवाद भी होई, तो कुशीनगर त निर्विवाद रूप से भोजपुरी प्रदेश के ही स्थान बा। भगवान् बुद्ध के परमज्ञान बोधगया में मिलल; बाकि ओह उपशम आ संबोधिप्रदायक ज्ञान के प्रथम प्रवर्त्तन सारनाथ में भइल, जे काशी का समीप छव मील का दूरी पर बा। स्पष्ट रूप से सारनाथ प्राचीन भोजपुरी जनपद मानल जा सकेला। यद्यपि ओह समय में भोजपुरी भाषा के विकास ना भइल रहे; तथापि जेह प्रदेश में एह घरी भोजपुरी बोलल जाता, ओह प्रदेश में ओह घरी भोजपुरी के पूर्ववर्त्ती कवनो प्राकृत भाषा ही बोलल जात होखी, एह में कवनो सदेह के बात नइखे। कहल जा सकेला कि प्राक्-भोजपुरी प्राकृत में ही प्राचीन बौद्धधर्म के लोकव्यापक संदेश प्रकट भइल होई आउर ओह घरी के भिक्षु लोग, जेकरा अग्रस्थानीय के पंचवर्गीय भिक्षु कहल जाला, ऊ लोग ऊहे मूल प्राकृत में, जे अन्ततोगत्वा भोजपुरी के आदिम स्रोत होई पालीभाषान्तर्गत भगवान् बुद्ध का धर्म-चक्र-प्रवर्त्तन उपदेश पर आपसी बातचीत करत होई लोग। यदि अजातशत्रु काश्य वाराणसी में उपनिषद् के सत्य के उपदेश कइलन, त बौद्ध दुखवाद, निर्वाणवाद, मध्यमप्रतिपदा आ शीलवाद के समर्थन सारनाथ में भइल। अर्थात् मूल भोजपुरी जनपद से ही भारतीय ज्ञान के चरम उत्कर्ष व्यक्त करेवाला आ संसार में महान् आलोक प्रकट करेवाला संदेश प्रकट भइल, जेकर प्रचार आ प्रसार, कालक्रम में, विश्व में कम-बेसी भइल आ हो रहल बा।

भारतीय धर्म आ संस्कृति के विकास में समाधियोग आ कबीरवादी[1] भक्तियुग के भी महान् योगदान बा। नाथपंथ का विकास में गोरखपुर के बड़ा

---

१. अयोध्यासिंह उपाध्याय, हिन्दी भाषा और उसके साहित्य का विकास, पृ० १५९ : "कबीर साहब ने स्वयं कहा है 'बोली मेरी पूरब की' जिससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि उनकी रचना पूर्वी हिन्दी में हुई है और इन कारणों से यह बात पुष्ट होती है कि वे पूर्व के रहनेवाले थे और उनकी जन्मभूमि काशी थी और उसके आसपास के जिलों में भोजपुरी और अवधी-भाषा ही अधिकतर बोली जाती है।"

महत्त्व बा। गोरक्षपद्धति[1] आ गोरक्षसंहिता[2] ग्रंथ में हठयोग के बड़ा जबरदस्त समर्थन भइल बा। निर्गुण-ज्ञान-शाखा के परम समर्थक कबीरदास काशी के ही रहस आ गोरखपुर के पास 'मगहर' में उनकर निर्वाणभूमि बा। कहल जा सकेला कि पश्चिमी उत्तरप्रदेश में आ अवध में भक्तिकालीन संस्कृति के महान् समर्थक लोग उत्पन्न भइल, तब मूल भोजपुरी जनपद में ही निर्गुणशास्त्र के तत्वज्ञानी ओ हठयोगी प्रकट भइलन। गोरखनाथ का नाथपंथ का हठयोग के विकट क्रिया के समर्थन से संस्कृति के एक विशेष क्षेत्र के विस्तार भइल। कबीरदास से बढ़के निर्गुणवादी संत और विराट् परमेश्वर के समर्थक कम लोग भइल। रवीन्द्रनाथ ठाकुर भी कबीर का रहस्यवाद से बहुत प्रभावित रहस। निर्गुण रहस्यवाद आ हठयोग विषयक क्रिया-कलाप के भी आज का जगत् में महत्त्व मानल जा रहल बा। वर्त्तमान काल में भी भोजपुरी प्रदेश में महत्त्वपूर्ण आ पहुँचल साधु-संत भइलन हँ। छपरा जिलान्तर्गत मांझी[3] और चम्पारन जिला के कुछ स्थान पर भी साधु-

---

१. गोरक्षपद्धति के निम्नलिखित श्लोक विचारणीय बा :—

नाभेरुर्ध्वमधश्चापि स्थानं कुर्यात्प्रयत्नतः।
षण्मासमभ्यसेन्मृत्युं जयत्येव न संशयः॥
न हि पथ्यमपथ्यं वा रसाः सर्वेऽपि नीरसाः।
अपि भुक्तं विषं घोरं पीयूषमिव जीर्यतेत॥

२. गोरक्षसंहिता द्वादश पटल के निम्नलिखित योगवेदान्त समर्थक श्लोक संकलनीय बा :—

मुखमाहवनीयं स्यात्तास्मिन्मन्त्राः प्रतिष्ठिताः।
अघोरं कालमित्युक्तं अघोरं विष्णुरुच्यते॥ १९८
अघोरोऽहं महेशानि अघोरा त्वं वरानने।
बहुरूपधरो ह्यग्निः प्रचण्डकालमन्तकः॥ १९९

गोरक्षसंहिता त्रयोदशपटल में भी लिखल बा :—

न तेन रहितं किंचिज्जगत्स्थावरजंगमम्।
तस्यैव दक्षवक्त्रं हि अघोरं नाम नामतः॥ ११
अजेयासर्वदेवेषु कालो मृत्युर्न बाधते। १२

३. 'शब्दप्रकाश' आ 'प्रेमप्रकाश' के रचयिता धरनीदासजी सत्रहवीं शताब्दी में वर्तमान रहस।

संत के महत्त्व रहे। श्री सीतारामशरण भगवान प्रसाद 'रूपकला' आ साधु रामदास छपरा जिला के ही रहस। पुरोहितीय या याज्ञिक कर्मकाण्ड का विरोध में, साधु-संतगण जे काफी संख्या में भोजपुरी जनपद में पावल जाले, ऊ लोग लोकतान्त्रिक ढंग के पूजा-पाठ के समर्थन कइल। तथाकथित पिछड़ा वर्ग मे भी साधु लोग आइल। संस्कृत ज्ञान के अवच्छेदकतावाद आ स्फोटवाद के घटाटोप से अलग हट के लोकभाषा में नीति-नियम, धर्म, शील आदि के समर्थन क के साधु-संतगण धार्मिक प्रचार आ प्रसार में महत्त्वपूर्ण भाग लेहल लोग। साधु-संत के संस्कृति भी भोजपुरी जनपद के एगो विशिष्ट योगदान मानल जा सकेला। भोजपुरी जनपद में यद्यपि दक्षिण भारत का मन्दिर नियर विशाल मन्दिर नइखे, फिर भी छोट-छोट मन्दिर काफी संख्या में पावल जाला। कथा-कहानी, पूजा-पाठ, शंख-घंटा आदि का माध्यम से धार्मिक भावना के प्रशस्त करे में भोजपुरी संत लोग के महत्त्व माने के परी। रामकृष्ण परमहंस के शिष्य स्वामी विवेकानन्द के गुरुभाई स्वामी अद्भुतानन्द (लाटू महाराज) छपरा जिला के एगो अत्यन्त साधारण परिवार में जन्मल रहस। गाजीपुर के पवहारी बाबा के साधुता बड़ा प्रसिद्ध रहे। जब-जब धर्म आ संस्कृति पर बाहरी राजनीतिक आक्रमण भइल, तब सरल भाषा में भोजपुरी धार्मिक कवितन में लोकमंगल के भावना के समर्थन भइल। गोस्वामी तुलसीदास के **रामचरितमानस** यद्यपि अवधी भाषा में बा, फिर भी ओकरा पर जहाँ-तहाँ भोजपुरी प्रभाव भी देखल जा सकेला। तुलसीदास के दूगो भजन—'भये प्रकट कृपाला' आ 'श्रीरामचन्द्र कृपाल भजु मन' भोजपुरी जनपद में काफी लोकप्रिय बा ओ जनमानस के धार्मिक ढंग से मोड़े में सब के काफी प्रभाव बा। आज जब विश्व में नास्तिकता, भौतिकवाद, मार्क्सवाद, फ्रायडवाद आ डार्विनवाद के दुंदुभी बाज रहल बा, ओह काल में भोजपुरी लोग देश का नाना भाग में भोजपुरी लय में 'भये प्रकट कृपाला' आ **हनुमान चालीसा** गा-गा के आत्मिक शान्ति प्राप्त करेलन आ दुख-विपत्ति में बजरंगबली से ओह लोग का मदद मिलेला। मालुम ना कि बजरंगबली के जन्म कवना जनपद में भइल, बाकी बजरंगबली के व्यक्तित्व बिलकुल भोजपुरिआ व्यक्तित्व ह। भोजपुरी लोग के परम आराध्यदेव अंजनानन्दन सूरज के लीलेवाला बजरंगबली हवन। **हनुमान-चालीसा** के मूल लेखक चाहे तुलसीदास होखस चाहे आउर केहू लेखक होखे, लेकिन भोजपुरी संस्कृति के आधारस्तम्भ रूप में **हनुमान-चालीसा** प्रकट भइल बा, एह में कवनो संदेह नइखे। जब कबीरदास लिखले, 'कबीरा खड़ा बजार में, लिए लुकाठी हाथ, जो घर जारे आपना चले हमारे साथ', तब भोजपुरी

मनोवृत्ति के उत्कृष्ट उदाहरण प्रकट भइल। ओकर दोसर रूप **हनुमान-चालीसा** का एह लाइन में व्यक्त होता—

भूत-पिशाच निकट नहीं आवे,
महावीर जब नाम सुनावे।

× × ×

विकट रूप धरि लंक जरावा।
भीम रूप धरि असुर संहारे।

ई सब लाइन भोजपुरी जनपद में लड़िकन से ले के सेयान लोग तक याद राखेला आ रात-बिरात, एकान्त बाग-बगइचा में, नदी-नाला में, भूत-पिशाच, साँप-बिच्छू, चोर-डाकू, सभ से भोजपुरी लोग के रक्षा हनुमानजी से होला। अइसन विश्वास एह जनपद में दृढ़ बा।

चंडीशतक, सूर्यशतक, भर्तृहरि के शतकत्रय आदि का समान भोजपुरिआ पं० रामावतार शर्मा जब आपन शतक लिखलन त हनुमानजी ही उनकर विषयवस्तु भइलन आ **मारुतिशतकम्** लिखाइल।

मध्ययुग में विदेशी आक्रमण आ प्रभाव का कारण भोजपुरी क्षेत्र के स्वतंत्र राजनीतिक व्यक्तित्व प्रशस्त रूप से मुखर ना हो सकल।

सांस्कृतिक संघर्ष भी ओह युग में चलत रहे, जेकर निखार कुछ-कुछ तत्कालीन भक्ति साहित्य आ रीतिकालीन साहित्य में देखल जा सकेला। लेकिन ओह संस्कृति के बहुत अवशेष एह घरी स्पष्ट नइखे। फिर भी, यदि ध्यान लगा के जीर्ण मन्दिर, ध्वस्त इमारत, बिखरल पत्थर आदि के अध्ययन कइल जाय, तब कुछ-न-कुछ सामग्री प्राप्त हो सकेला।

साहित्य संस्कृति के एक महत्त्वपूर्ण अंग ह। भोजपुरी जनपद के निवासी लोग के हिन्दी भाषा आउर साहित्य का विकास में भी बड़ा योगदान बा। ऊपर काशी नगरी के भोजपुरी संस्कृति में महत्त्वपूर्ण स्थान देखावल गइल बा। हिन्दी साहित्य का विकास-क्रम में भी भोजपुरी जनपदान्तर्गत काशीनिवासी या काशी के आपन साहित्यिक केन्द्र बनावेवाला लोग के महत्त्वपूर्ण स्थान बा। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आ बाबू जयशंकर प्रसादजी काशी में ही भइलन आ काशी में ही ई लोग आपन साहित्यिक कर्तृत्व तइयार कइलन। पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' भी आजमगढ़ जिलान्तर्गत निजामाबाद के निवासी रहीं।

संस्कृत का शार्दूलविक्रीड़ित आ मन्दाक्रान्ता आदि विकट छंद में प्रियप्रवास के रचना कइल इ भोजपुरी संस्कृति से प्रभावित साहसी पुरुष से ही संभव रहे। प्रेमचन्दजी के जन्मस्थान लमही काशी से पाँचे मील दूर बा। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल बस्ती जिला के निवासी रहस।

यज्ञ, वेदवाद, मीमांसा आदि का विरोध में भोजपुरी जनपद में विचार-स्वतंत्रता के भी उदय भइल। परमार्थदर्शन के रचयिता पं० रामावतार शर्मा छपरा जिला के निवासी रहस। निखिल विश्व ब्रह्माण्ड में, उनका अनुसार, परिव्याप्त एकेगो परमार्थतत्व बा। ओह विराट्तत्व के प्रकृत्ति भी कह सकीले या ब्रह्म भी कह सकीले। सब कुछ ओही तत्व के बुद्बुद ह। राहुल सांकृत्यायन भी स्वतन्त्र चिन्तक रहस। आजमगढ़ में उनकर जन्म भइल रहे। पहिले ऊ सनातनी पंडित रहस। ओकरा बाद आर्य समाज के प्रचारक आ बाद में बौद्ध धर्म के भिक्षु आ अन्ततः साम्य-वाद के समर्थक भइलन। ऊ उन्मुक्त विचार-पद्धति के पोषक सिद्ध भइलन। श्री काशीप्रसाद जायसवाल **हिन्दू पौलिटी** ग्रंथ लिख के प्राचीन भारत में गणतांत्रिक व्यवस्था के उपस्थिति सिद्ध कइलन। अधिकांश लोग ईहे मानत रहे कि भारत में बराबर एकतंत्र, राजतंत्र आदि के ही प्रधानता रहे। ई सबका विरोध में प्राचीन भारतीय संघवाद आ गणतंत्र के उपस्थिति सिद्ध करे वास्ते काशीप्रसाद जायसवाल नियर एक भोजपुरी संस्कृतिवाला व्यक्ति के जरूरत रहे। जायसवालजी जेह तरह से अक्खड़ मिर्जापुरी रहस, ओही तरीका से अपना इतिहास का संशोधन-पद्धति में भी भोजपुरी अक्खड़पन व्यक्त करत रहस। भोजपुरिआ जायसवाल ही लिख सकत रहस कि सिकन्दर डर का मारे आ घबाइल होके पंजाब से भागल।

१८५७ के प्रथम स्वतंत्रता आन्दोलन में भी भोजपुरी जनपदान्तर्गत लोग के नेतृत्व रहे। यदि महाराष्ट्र, दिल्ली, उत्तरप्रदेश आदि से नाना साहब, तात्याटोपे, झांसी के रानी लक्ष्मीबाई आ बहादुरशाह जफर आदि लोग स्वतंत्रता संग्राम के नेतृत्व प्रदान कइलस, त भोजपुरी जनपद के भी लोग आपन महत्त्वपूर्ण भूमिका देखावल। बलिया के मंगल पाण्डेय आ भोजपुर निवासी श्री कुँवर सिंह आ अमर सिंह आदि लोग भी भोजपुरी संस्कृति के राजनीतिक रूप प्रकट कइल आ बतावल कि भोजपुरी संस्कृति, दासता आ पराभव का बदला में स्वतंत्रता के समर्थक ह। संस्कृति के रूप आत्मिक चिन्तन आ शील में व्यक्त होला, ई ऊपर कहल गइल बा। लेकिन ओह चिन्तन आ शील के राजनीतिक

रूप के निखार भी महत्त्वपूर्ण ह। एह से सांस्कृतिक उत्कर्ष के राजनीतिक अभिव्यक्ति पर भी ध्यान देवे के आवश्यकता बा। बीसवीं शताब्दी में भारत का राजनीतिक जागरण में भी भोजपुरी जनपद के विशेष स्थान बा। महात्मा गाँधीजी जब दक्षिण अफ्रिका से अइलीं आ भारतवर्ष में स्वतंत्रता-संग्राम के बिगुल बजवलीं तब पहिला जोरदार बिगुल भोजपुरी भाषा-भाषी चम्पारण में ही बाजल। १९१७ में भारतवर्ष का राजनीति में एगो संस्कृतिमिश्रित नैतिक पद्धति आ तकनीक के सूत्रपात भइल। यद्यपि सत्याग्रह रूपी महान अस्त्र के प्रयोग गांधीजी दक्षिण अफ्रिका में कइलें रहीं, फिर भी, चम्पारण में निलहा गोरा लोग के विरुद्ध में पहिले-पहिल क्रियात्मक अहिंसा के विराट् दर्शन गांधीजी का आ देश का भी भइल। गांधीजी अपना **आत्मकथा** में एक अध्याय लिखले बानी, जेकर शीर्षक बा 'बिहार की सरलता'। चम्पारण के सत्याग्रह आन्दोलन भोजपुरी प्रदेश में भइल आ ओह आन्दोलन में गांधीजी के दूगो महत्तम सेनानी श्री ब्रजकिशोर प्रसाद आ डा० राजेन्द्र प्रसाद भोजपुरिया रहे लोग। राजकुमार शुक्ल जे गांधीजी के बिहार बोला ले अइलन, ऊ भी चम्पारण जिला के भोजपुरी भाषी ही रहस। कहे के आवश्यकता नइखे कि भारत का विमोचन-संग्राम में चम्पारण सत्याग्रह के बिजली का समान प्रभाव भइल। जन-आन्दोलन का रूप में एगो नया मार्गदर्शन मिलल आउर बाद में गांधीजी के जे आन्दोलन चलल, ओह में भी सेवा, साधना, बलिदान ई सब मार्ग अपनावे में भोजपुरी जनपद के लोग बहुत आगे रहल। देश-धर्म के नाम पर आपन सभ कुछ न्योछावर कर देवे के जे भोजपुरी संस्कृति के महान् आदर्श बा ओकर राजनीतिक रूप गम्भीरता से प्रकट भइल। दोसर प्रदेश में भले ही चालाकी के राजनीति विकसित भइल होखे, लेकिन भोजपुरी प्रदेश का राजनीतिक क्रिया-कलाप पर एक निःस्वार्थमूलक सांस्कृतिक उत्कर्ष के भी छाप पड़ल बा—ई स्पष्ट बा। गाँधी-युग में जे-जे राजनीतिक आ सामाजिक संघर्ष भइल, ओह क्रिया-कलाप में भी भोजपुरी जनपद के लोग के नेतृत्व का स्तर पर आ कार्यकर्ता का स्तर पर भी महत्त्वपूर्ण स्थान रहे। १९४२ का आन्दोलन में भी कई लोग शहीद होके संस्कृति के स्वतंत्रता-पोषक रूप के व्यक्त कइल। हजारीबाग जेल से भाग के श्री जयप्रकाश-नारायण १९४२ का आन्दोलन के संदेश के संगठनात्मक रूप देवे में महत्त्वपूर्ण काम कइलन। सन् १९७४-७५ के बिहार आन्दोलन के भी स्वतंत्रता के व्यापक रूप के समर्थित करे में महत्त्वपूर्ण स्थान राजनीति का इतिहास में बा। एकरा से व्यक्त होता कि भोजपुरी जनपद का

संस्कृति में स्वतंत्रता के अन्वेषण के भी महत्त्वपूर्ण स्थान बा। भोजपुरी लोग बराबर स्वतंत्रता के समर्थक रहल बा आ ई स्वतंत्रता के क्षेत्र, दर्शन, धर्म और नीति का साथ-साथ राजनीतिक विमोचन भी रहल बा।

भोजपुरी संस्कृति में मानववाद के भी प्रधानता देखल जा सकेला। बंगाल का संस्कृति में ईश्वरभक्ति के प्रधानता बा। पंजाब का संस्कृति में प्रकृतिवाद के उत्कर्ष बा। देववाद का साथ-साथ व्यापक भोजपुरी संस्कृति में मानववाद विकसित भइल। परिश्रमपूर्वक खेती से जीविका प्राप्त करके कष्ट-पूर्ण जीवन बितावल एह मानववाद के व्यावहारिक विशेषता बा। जेह बिप-रीत परिस्थिति में भोजपुरी क्षेत्र के लोग एने कई सौ वर्ष से जीवन व्यतीत कर रहल बा, ऊ बिना मानववादी उत्कर्ष के संभव नइखे। जीवन में जेकरा विश्वास नइखे, ऊ एतना कष्टपूर्ण परिश्रम क के शरीर धारण करे के आयास ना कर सकी। भोजपुरी जनपद के लोग धूप, वर्षा और ठंढी से निरन्तर लड़ रहल बा। जेठ का दुपहरी में हर जोतल, पाताल तक चल जायेवाला कुँआ से जल निकाल के धरती के सींचल और बरसात में पानी पड़ला पर भी ओकरा से लड़ल—ई सब काम भोजपुरी मानववादी ही क सकेला। भोजपुरी संस्कृति के मानववाद के क्रियात्मक रूप अखण्ड परिश्रम-शीलता आ निरंतर कष्ट-सहन में व्यक्त हो रहल बा। भोजपुरी मानववाद कला आ सौन्दर्य के अतिशय उत्कर्ष भले ही व्यक्त ना क सकल होखे, फिर भी घोर परिश्रम आउर अटूट अध्यवसाय एकर मूल बिन्दु रहल बा। श्रम-सीकर से परिपूर्ण भोजपुरी कृषक आउर हरिजन के मुखमण्डल सौन्दर्य के सृष्टि भले मत करे, लेकिन मानव जीवन का प्रति एगो वेदनापूर्ण उत्कृष्टता व्यक्त क रहल बा। भोजपुरी संस्कृति के कुछ अंश एह बात के व्यक्त करता कि रजकण के भी निखिल विश्व में महत्त्व बा। यदि समस्त ब्रह्मांड एके विराट्तत्व के प्रकटीकरण बा, त समस्त कण, अणु, परमाणु एके ऊर्जा के रूप बा। एह दृष्टि से, धरती पर रहेवाला गरीब हरिजन, शोषित कृषक, मजदूर, बिधवा, सब एके सांस्कृतिक सूत्र में बँधल बा आ एके विराट् तत्व के रूप बा। एह मानववादी अद्वैतवाद के रूप भोजपुरी अंचल में हमनी देख सकत बानी। साहित्यिक, नैतिक आ आध्यात्मिक संस्कृति के पुष्ट करे वास्ते सामाजिक आ आर्थिक आधार मजबूत चाहीं। वैयक्तिक साधना द्वारा केहू-केहू मेधावी पुरुष आपन विलक्षणता प्रकट कर सकत बाड़न, लेकिन व्यापक स्तर पर सांस्कृतिक योगदान करे वास्ते आर्थिक आ सामाजिक शक्ति चाहीं। एने दू सौ वर्ष में भोजपुरी क्षेत्र में सामन्तवाद के प्रभाव

रहल बा। एह से आर्थिक और सामाजिक शोषण भी काफी लोग के भइल। एह से संस्कृति, व्यापक शिक्षा का स्तर पर, आपन प्रभाव ना व्यक्त क सकल। लेकिन सामन्तवादजनित दुख, पीड़ा आ अवसाद विचिन्तनात्मक स्पष्टीकरण का वास्ते सामग्री प्रदान कइले बा। ग्रामीण शोषण के कुछ-कुछ रूप **देहाती दुनिया** में स्व० शिवपूजन सहाय व्यक्त कइले बानी। जेह प्रकार से रूसी साहित्यकार लोग रूस में व्याप्त जारशाही, चर्चशाही, सामन्तवाद आदि का द्वारा पीड़ित रूसी जनता के चित्र उपस्थित कइले बा, ओही तरीका से भोजपुरी का माध्यम से एह सामाजिक पक्ष के चित्रण सांस्कृतिक योगदान कहल जाई। एह प्रकार साहित्यिक यथार्थवाद आ भावनात्मक अस्तित्ववाद के परिव्यक्ति आवश्यक बा।

संस्कृति के दू पक्ष ह। एक, विशिष्ट या उच्चस्तरीय तथा विचिन्तनात्मक—जइसे औपनिषद, बौद्ध, भक्तियुगीन आ संतसम्प्रदायात्मक आदि। उच्च शिक्षा से विभूषित लोग का एकरा से संबंध बा। दोसर पक्ष बा साधारण जनता के व्यावहारिक धर्म तथा प्रचलित सामाजिक संस्कृति। उच्च दार्शनिक तत्त्व का बदला में जन-संस्कृति में अनेक देवी-देवता, भूत-प्रेत-पिशाच, डाइन-भूतिन, ओझा आदि के महत्त्व व्यक्त होला। भोजपुरी जनपद का देहात में अनेक लोग आज भी देवी-देवता के सामने बलि देवेलें आ 'मनता' मानेलन। मनता मानल भोजपुरी देहात के एगो प्रमुख धार्मिक कारक बा। जहाँ बेमारी होखे तुरंत देवी-देवता के सामने मनता मानल जाला, कवनों लमहर कार्य में सिद्धि भइला पर देवी-देवता का सामने मिठाई चढ़ावल भी ओह लौकिक संस्कृति के एगो उपकरण बा। डाइन-भूतिन में विश्वास भी भोजपुरी जनपद में काफी बा। जब कोई वृद्धा स्त्री जटा बढ़ा के आ भयंकर रूप कर के लड़िकन के आ स्त्रियन के शाप देवेले, ओह घरी ऊ लोग आतंक से भर जाला। जब केहू किशोर के पारिवारिक कलह का पृष्ठभूमि में मृत्यु हो जाय, तब ओकर भी श्रेय डाइन-भूतिन के ही दिहल जाला। पारिवारिक कलह में स्त्री लोग एक दोसरा पर डाइनपन के आरोप लगावल साधारण बात समझेला। डाइनपन के प्रभाव ना केवल दारुण मृत्यु का अवसर पर देखल जाला, बल्कि बांझपन आदि भी कुछ अंश तक डाइनपन के प्रकोप ही समझल जाला। एह प्रकार से भोजपुरी जनपद में एगो सांस्कृतिक विरोधाभास देखल जा सकेला। यदि एक ओर परमात्म-ज्ञान, अद्वैत दर्शन, नैरात्म्यवाद आदि के गहन विचार के तत्त्व बा, त दोसरा ओर काफी जनता भूत-प्रेत, डाइन आदि के आतंक से पीड़ित रहेला। एह प्रकार के सांस्कृतिक द्वन्द्व अन्यत्र भी

देखल जा सकेला। प्राचीन यूनान में भी सब कोई अफलातुन द्वारा समर्थित 'आइडिया ऑफ गुड' के उपासक ना रहे। बहुत लोग अपना-अपना शहर आ गाँव के देवी-देवता के पूजत रहे। एह से अद्वैतवाद, पिशाचवाद आ डाइनवाद का द्वन्द्व से व्यथित होखे के कवनो काम नइखे।

संस्कृति के जहाँतक सामाजिक पक्ष बा, ओह विषय में कह सकीले कि भोजपुरी समाज में पितृसत्तात्मक पारिवारिक व्यवस्था के प्रधानता बा। पितृसत्तात्मक समाज में पिता के प्रधानता रहेला। स्त्री के अपेक्षा एह समाज में पुरुष के प्रधानता रहेला, आउर पिता का बाद चाचा, काका आदि के प्रधानता रहेला। वेदकाल से ही प्राचीन हिन्दू परिवार में पिता के प्रधानता रहे। पिता का प्रधानता पर ही भोजपुरी सम्मिलित परिवार टिकल बा। आजकल प्रतियोगिता आ आर्थिक संघर्ष का कारण धीरे-धीरे सम्मिलित परिवार के नींव कमजोर हो रहल बा; फिर भी अभी भोजपुरी जनपद के लोग शहर में कमा के आपन कमाई के अंश देहात में भेजेलन, ताकि ओकरा से देहात में रहेवाला परिवार आर्थिक पुष्टि प्राप्त करे। छपरा जिला के बहुत लोग भारत का बड़ा-बड़ा शहर से लाखन रुपया प्रत्येक महीना मनिआर्डर से घर भेजेला। आउर भोजपुरी जिलन में भी एक तरह के बात होत होई। एकरा से मालूम पड़ता कि भोजपुरी लोग में सम्मिलित परिवार के अबही भी काफी ध्यान बा। योगी अरविन्द का अनुसार सम्मिलित परिवार प्राचीन भारतीय संस्कृति के एक महत्त्वपूर्ण पाया रहे। ई ठीक बा कि औद्योगीकरण आ नागरीकरण से सम्मिलित परिवार के मर्यादा टूटी, फिर भी अबही पितृसत्तात्मक सम्मिलित परिवार भोजपुरी संस्कृति के एगो आधार-स्तम्भ मानल जा सकेला।

व्यावहारिक सामाजिक सन्निकर्ष के रूप प्रकट करे में गाँव के बाजार के भी स्थान बा। गाँव के बाजार जेकरा के अंग्रेजी में 'भीलेज मार्केट' कह सकीले, ऊ एगो व्यावहारिक सम्मेलन के रूप लेवेला। सप्ताह में तीन बार या दू बार कई गाँव के लोग बाजार में मिलेला। बाजार ना केवल विनिमय के स्थान ह, बल्कि सामाजिक संगोष्ठी के भी क्षेत्र ह। तरह-तरह के सम्वाद-कुसम्वाद, दन्तकथा आ प्रवाद के विस्तार में गाँव के बाजार के एगो लौकिक सांस्कृतिक रूप व्यक्त होला।

भोजपुरी सस्कृति शौर्य, साहस, अभय, निर्द्वन्द्वता आदि के महत्व देले। एह जनपद में शरीर के मजबूत कइल एगो निर्मल आदर्श मानल जाला। एही से एह जनपद के लोग के शरीर अपेक्षाकृत आउर स्थान का

तुलना में मजबूत होला। एही कारण आउर प्रान्त में भी सिपाही के काम एह जनपद के लोग करेला। साहस प्राप्त करे वास्ते अखाड़ा में पहलवानी कइल भी एह जनपद के लोग के लक्षण ह। जहाँ पहलवानी कइल जाई, ऊहाँ कुछ-ना-कुछ पौष्टिक भोजन करे के भी प्रवृत्ति होई। कह सकीले कि शारीरिक मजबूती के प्राप्ति आ दीर्घ तथा पौष्टिक भोजन के सेवन ई भोजपुरी संस्कृति वाला लोग के लक्षण ह। बल आ शक्ति के उपासना करे के जे सन्देश भारतवर्ष का संस्कृति में वेद का समय से ही व्यक्त भइल, ओकर आज भी व्यावहारिक रूप भोजपुरी जनपद में देखल जा सकेला।

यथार्थवाद भी भोजपुरी संस्कृति के लक्षण ह। पहिले कहल गइल बा कि सामन्तवाद का प्रधानता के कारण शोषण के नग्न रूप भोजपुरी जनपद में व्यक्त होला। शोषित आ पीड़ित जनता यथार्थवादी होइये जाई। भोजपुरी जनपद के लोग पइसा-पइसा, कउड़ी-कउड़ी के हिसाब राखेला। खेती सम्बन्धी झगड़ा भी एही यथार्थवाद के रूप ह। यदा-कदा डेंरेड़ काटल आ डेंरेड़ के एक बीत्ता भी जमीन अपना खेत में मिला लेहल ई भोजपुरी पुरुषार्थ के व्यावहारिक प्रतीक ह। यद्यपि केहू भी सांस्कृतिक सुधारक एह प्रकार के यथार्थवाद के कदापि पोषण ना करी, फिर भी शोध-कर्त्ता का रूप में ई सब पक्ष से हमनी आँख ना मोड़ सकीं। व्यापक अर्थ में लोक संस्कृति के मीमांसा करे में दैनिक जीवन के कतिपय विकृत पक्ष के भी आलोचन-पर्यालोचन होखे के चाहीं। गरीबीजनित घोर यथार्थवाद भोजपुरी मानव के बहिर्मुखी बना देला आ मनुष्य ई कहे पर बाध्य हो जाला कि भोजपुरी जनपद में अन्तर्मुखी वृत्ति-सम्पन्नता के क्षेत्र सार्वजनिक स्तर पर कुछ सीमित बा।

प्राचीन भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक एकता आ मानव समता पर बहुत बल देले बा। यजुर्वेद कहत बा —

तत्र को मोहः कः शोकः एकत्वमनुपश्यतः।

गीता में भी कहल बा :—

विद्याविनय सम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि
शुनि चैव श्वपाके च पंडिताः समदर्शिनः,

साम्य के वर्णन गीता में भइल बा। सब मनुष्य एके विराट् परमेश्वर के अंश ह—ई मान्यता भारतीय संस्कृति के ह। फिर भी एह आध्यात्मिक दर्शन का बावजूद भोजपुरी जनपद में वर्णवाद के विडम्बना घोर रूप में व्याप्त बा। शहर में भले ही लोग संविधान के दुहाई दे के समता के प्रचार आ

प्रसार करे, तथापि देहाती इलाकन में वर्णवाद के दुष्परिणाम भयंकर मात्रा में देखल जा सकेला। चुल्हा-चक्की के बखेड़ा अभी काफी मजबूत बा। स्वामी विवेकानन्द का शब्द में कह सकीले कि धर्म, रसोइयाघर में जाके छिपल बा। रसोइयाघर के पवित्र बनावल व्यावहारिक धर्म के परम प्रशस्त लक्षण ह। वर्णवाद का चलते अस्पृश्यतावाद, हरिजन-उत्पीड़न आदि से भोजपुरी जनपद भी पूरा तरह से ग्रस्त बा। एह असमतामूलक वर्णवाद के हटावे वास्ते एगो विराट् जन-आन्दोलन के आवश्यकता बा। वर्णवाद आ जातिवाद के उग्रता भोजपुरी जनपद में काफी बा आ अपना मुँह से बड़ आदमी आ नान्ह जात में अन्तर के महत्त्व बतावल निन्दनीय काम ना मानल जाला। ई घोर लज्जा के विषय बा। बाकि एतना एगो निमन बात बा कि होली गावे का समय या रामायण गावे का समय, सब जाति के लोग एके जगहा बइठेला आ बड़ा प्रेम आ उत्साह से होली आ रामायण गावेला। यद्यपि व्यावहारिक क्षेत्र में जातिवाद के उग्रता व्यक्त बा, तथापि सामाजिक जीवन के कतिपय क्षेत्र में व्यावहारिक समता के कुछ उदाहरण भी देख के चित्त हर्षित होला।

भोजपुरी जनपद का संस्कृति के अनेक पक्ष बा।[1] एह छोट लेख में कुछ विशिष्ट पक्ष के ही उद्घाटन संभव हो सकल बा।

—विश्वनाथ प्रसाद वर्मा

●

१. द्रष्टव्य, विश्वनाथ प्रसाद वर्मा, "मध्य गाङ्गेय संस्कृति," भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, मई १९७६।